शेखावाटी का प्रमुख आस्थाधामः—

सालासर बालाजी जहां बालाजी वचनों में बांधकर प्रकट हुए

शेखावाटी अंचल के सीकर जिले के सुजानगढ़ तहसील के सालासर ग्राम में स्थित बालाजी धाम जन—जन की आस्था का प्रमुख केन्द्र रहा हैं। भक्त बुलाए, भगवान न आए ऐसा कभी हुआ है? भगवान भक्त के वचनों में बांधकर चले आते हैं ऐसी ही भक्तिपूर्ण गाथा सालासर धाम के बालाजी सिद्धपीठ की है।

ऐसी मान्यता है कि भक्त शिरोमणी बाबा मोहनदास जी की 210 वर्षों पूर्व की गई सच्ची तपस्या के फलस्वरुप यहां उनके वचनों में बंधकर भक्तों की मनोकामना पूर्ण करने स्वयं बालाजी महाराज यहां सदैव विराजमान रहते है। बाबा मोहनदासजी ही इस मंदिर के संस्थापक हैं जिनकी समाधि मंदिर के निकट बनी हुई है। कहा जाता है कि बालाजी से उनका सखा भाव था और वे उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर प्रकट हुए थे। बाबा मोहम्मद रूल्याणी गांव के पण्डित लछीराम पाटोदिया के छह पुत्रों एवं एक पुत्री में सबसे छोटे पुत्र थे। वे बाल्यावस्था से ही बालाजी को अपना इष्ट देव मानकर पूजा करते थे, कानीबाई बहिन के विधवा होने पर आप सालासर आए और ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर कानीबाई एवं उसके पुत्र उदयराम के रक्षण—पोषण की जिम्मेवारी लेकर तपस्यालीन हुए।

मंदिर के गर्भ गृह में विराजमान प्रतिमा के प्राकट्य की कथा भी रोचक है। कहते हैं कि संवत् 1811 में निकटवर्ती आसोटा (लाडनूं नागौर) के घिटाला गौत्र के जाट किसान जब अपने खेत में हल चला रहे थे तो वह किसी मूर्ति से अड़ गया, जिस पर किसान को आवाज सुनाई दी। खोदने पर बालाजी की यह मन मोहक प्रतिमा निकली, किसान ने मूर्ति को पेड़ के नीचे रखकर दूर हुआ तो उसके पेट में भयंकर उदरशूल हुआ। जब उसकी पत्नी भाता दोपहर का भोजन लेकर आई तो उसने सारी बात सुनकर श्रद्धापूर्वक चूरमे का प्रसाद वहीं पर चढ़ाया, तब तत्काल किसान का पेट दर्द ठीक हो गया। बालाजी ने रात्रि को आसोटा के ठाकुर को (जिनके यहां सालासर के ठाकुर का पुत्र ब्याहा था) मूर्ति को सालासर पहुचाने का आदेश स्पप्न में दिया। उधर सालासर में अपने भक्त एवं दधिचिऋषि की परम्परा के संत मोहनदास को अपने प्राकट्य एवं मूर्ति के रुप में आने (प्रकट) की बात बताई। बैलगाड़ी पर रखी गई मूर्ति सालासर में आकर जिस स्थान पर रुकी उसी ऊंचे धोरे (टीले) पर श्रावण शुक्ला नवमी शनिवार को मूर्ति स्थापना मोहनदास जी एवं ग्रामवासियों ने हर्ष ध्वनि एवं हरिकीर्तन के साथ धूमधाम से कर दी। सालासर बाबा मोहनदास जी के तप एवं सच्ची भक्ति से सिद्ध बालाजी पीठ बना जहां पर पवन पुत्र का यह धाम भक्तों की मनोकामना पूर्ण करता है।

आस—पास ही नहीं वरन् देश के हर भाग से भक्तजन यहां पर दर्शन, पूजा, धोक, जात—जडूले करने प्रतिदिन आते रहते हैं जहां मेला सा लगा रहता है। लाल ध्वजा के साथ नारियल, लड्डू, पेड़े, चूरमा प्रसाद के रूप में चढ़ाए जाते हैं। प्रातः काल नगरों की ध्वनि के साथ सेवापूजा शुरू हो जाती है जो रात्रि तक जारी रहती है। श्रद्धालु पैदल, साइकिल, कनक दंडवत (पेट के बल) आते हैं। चैत्र मास एवं कार्तिक मास की पूर्णिमा को दो बड़े मेले लगते हैं जहां लाखों श्रद्धालुजन अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं।

सालासर मेले की व्यवस्था, पेयजल, आवास, रोशनी, यात्रियों के लिए सालसर की हनुमान सेवा समिति करती है। जिसकी एक कार्यकारिणी बनी हुई है। समिति द्वारा यात्रियों की सुविधाओं के लिए विशेष प्रयास रहता है।

श्याम जांगिड़
चिड़ावा
साभार— डमरु की आवाज सूनो ग्रन्थ स्मारिका 2004